दशाओं अथवा ...

प्राकृतिक नियमों से आर्थिक नियमों की भिन्नता

(DISTINCTION BETWEEN NATURAL LAWS AND ECONOMIC LAWS)

उपर्युक्त दोनों प्रकार के नियमों में सबसे बड़ी भिन्नता यह पाई जाती है कि आर्थिक नियम, प्राकृतिक नियमों की अपेक्षा कम निश्चित पाये जाते हैं। इस भिन्नता के निम्नलिखित कारण हैं–

(i) **विषय-वस्तु की भिन्नता** (Different Subject-matter)–प्राकृतिक विज्ञान जड़ वस्तु के अध्ययन से सम्बन्धित है जिसमें कोई प्रतिक्रिया अथवा परिवर्तनशीलता नहीं पाई जाती जबकि अर्थशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र एक मनुष्य से सम्बन्धित है जो एक चेतन, संवेदनशील, विवेकपूर्ण एवं स्वतन्त्र इच्छा वाला प्राणी है। परिवर्तनशील स्वभाव वाले मनुष्य के विषय में कोई निश्चित नियम नहीं बनाए जा सकते।

मार्शल के शब्दों में, "एक रसायनशास्त्री जिस विषय का अध्ययन करता है, वह हमेशा समान रहता है लेकिन अर्थशास्त्र जीव विज्ञान की भाँति ऐसे विषय का अध्ययन करता है जिसका आन्तरिक स्वभाव एवं बनावट तथा बाहरी रूप सदैव बदलता रहता है।"[1]

1. "The matter with which the chemist deals is the same always; but economics, like biology, deals with a matter, of which the inner nature and constitution, as well as the outer form, are constantly changing." —*Marshall*

Scanned with CamScanner

(ii) **प्रयोग क्षेत्र में भिन्नता** (Different Scope)—दोनों प्रकार के नियमों में प्रयोग सुविधा एकसमान नहीं होती। प्राकृतिक विज्ञानों में उनका अध्ययन विषय जड़ होने के कारण विभिन्न प्रयोग सहजता से किए जा सकते हैं लेकिन अर्थशास्त्र में इन प्रयोगों का क्षेत्र बहुत सीमित होता है क्योंकि इनका सम्बन्ध मनुष्य व इसके व्यवहार से होता है।

(iii) **मापदण्ड की भिन्नता** (Different Measurement)—प्राकृतिक विज्ञानों में नाप-तौल की एक निश्चित तथा विश्वसनीय तराजू होती है। आर्थिक तथ्यों की माप के लिए हमारे पास मुद्रा का मापदण्ड होता है किन्तु यह मापदण्ड अस्थिर एवं अपेक्षाकृत कम विश्वसनीय होता है। मुद्रा का मूल्य स्थायी न रहकर घटता-बढ़ता रहता है जिसके कारण मुद्रा रूपी मापदण्ड में अस्थिरता बनी रहती है।

(iv) **निश्चितता में भिन्नता** (Different Certainty)—वास्तविक जीवन में मानव व्यवहार, आर्थिक कारणों के अलावा सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक कारणों से भी प्रभावित होता है। ऐसी स्थिति में केवल आर्थिक आधार पर बनायां गया कोई भी नियम पूर्ण शुद्धता एवं निश्चितता के साथ कार्यशील नहीं हो सकता।

(v) **प्रभाव डालने वाले घटकों की भिन्नता** (Different Influencing Factors)—आर्थिक घटनाओं को निर्धारित करने वाले सभी घटकों का ज्ञान सुनिश्चित करना असम्भव है। प्रत्येक स्थिति के बारे में कुछ न कुछ अज्ञात कारण अवश्य रहते हैं। ऐसी दशा में अज्ञात कारणों का केवल ज्ञात कारणों के आधार पर बनाये गये आर्थिक नियमों पर अवश्य प्रभाव प्रड़ता है।

(vi) **मान्यताओं में भिन्नता** (Different Assumptions)—प्राकृतिक विज्ञानों के नियम सीधे-सीधे वास्तविक तथा सरल मान्यताओं पर आधारित होते हैं। लेकिन अर्थशास्त्र के अधिकांश नियम अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि आर्थिक नियम एक सीमा तक कल्पना के अंश लिए हुए होते हैं और यही कारण है कि वे प्राकृतिक विज्ञानों के नियमों की तुलना में कम निश्चित पाये जाते हैं। इसी आधार पर मार्शल ने आर्थिक नियमों की तुलना ज्वार-भाटे के नियम से की है। यह सही है कि आर्थिक नियमों की निश्चितता प्राकृतिक विज्ञानों के नियमों से कुछ कम होती है लेकिन यदि इनकी तुलना अन्य सामाजिक विज्ञानों के नियमों से की जाए तो आर्थिक नियम अधिक निश्चित पाए जायेंगे।

इस सम्बन्ध में मार्शल के अनुसार, **"जिस प्रकार रसायनशास्त्र की सही तराजू ने रसायनशास्त्र को अन्य प्राकृतिक विज्ञानों से अधिक सही बना दिया है, उसी प्रकार अर्थशास्त्र की तराजू (मौद्रिक मापदण्ड) ने, भले ही वह कम निश्चित और अपूर्ण है, अर्थशास्त्र को अन्य सामाजिक शास्त्रों से अधिक सही बना दिया है।"** [1]

आर्थिक नियम—मार्शल का दृष्टिकोण

(ECONOMIC LAW–MARSHALLIAN VIEWPOINT)

आर्थिक नियमों की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए मार्शल ने कहा है—

"आर्थिक नियमों की तुलना गुरुत्वाकर्षण के साधारण व निश्चित नियमों से न करके ज्वार-भाटे के नियमों के साथ की जानी चाहिए।" [2]

मार्शल के अनुसार ज्वार-भाटे के नियम की भाँति आर्थिक नियम भी अनिश्चित होते हैं। जिस प्रकार चन्द्रमा और सूर्य के प्रभाव के आधार पर दिन में ज्वार के दो बार आने की भविष्यवाणी की जाती है तथा यह स्पष्ट किया जाता है कि पूर्ण चन्द्रमा वाले दिन ज्वार में उठी समुद्री लहरों की ऊँचाई सबसे अधिक होती है तथा

1. "Just as the chemist's fine balance has made chemistry more exact than most of the other physical sciences, so this economist's balance (*i.e.*, money), rough and imperfect as it is, has made economics more exact than any other branch of social sciences." —*Marshall*
2. "The laws of economics are to be compared with the laws of tides rather than with the simple and exact laws of gravitation." —*Marshall*

Scanned with CamScanner

जैसे-जैसे चन्द्रमा का आकार घटता जाता है वैसे-वैसे ज्वार में उठी लहरों की ऊँचाई घटती जाती है ... प्रकार हम आर्थिक नियमों का प्रतिपादन करके उनकी व्याख्या करते हैं। जिस प्रकार ज्वार-भाटे का ... गलत हो सकता है, वर्षा, तेज हवा, आँधी-तूफान जैसे आकस्मिक घटक ज्वार-भाटे की उत्पत्ति, ... प्रकृति में परिवर्तन ला सकते हैं, ठीक उसी प्रकार मानवीय प्रकृति में परिवर्तन तथा सामाजिक ... आकस्मिक परिवर्तनों के कारण पूर्व-वर्णित आर्थिक नियम गलत सिद्ध हो सकते हैं।

मार्शल के अनुसार जिस प्रकार ज्वार-भाटे के नियमों के साथ '**सम्भवत:**' शब्द जुड़ा रहता है ... आर्थिक नियमों के साथ भी '**अन्य बातें समान रहें**' वाक्यांश जुड़ा रहता है। ज्वार-भाटे की सम्भावना ... आर्थिक नियम आर्थिक व्यवहारों के सम्बन्ध में केवल अनुमान या सम्भावनाएँ ही व्यक्त कर सकते हैं। ... है कि मार्शल ने आर्थिक नियमों की तुलना गुरुत्वाकर्षण जैसे नियम के स्थान पर ज्वार-भाटे के नियम ... उचित समझा।

प्रो. रॉबिन्स का मत मार्शल के विचार से भिन्न है। रॉबिन्स के विचार में भौतिक विज्ञानों के नियम ... अनेक स्थिर एवं निश्चित दशाओं पर निर्भर करते हैं। **(छात्रगण ध्यान दें कि इस विचार की व्याख्या गुब्बारे के उदाहरण द्वारा इसी अध्याय में स्पष्ट कर चुके हैं।)**

रॉबिन्स के विचार में जब भौतिक विज्ञान के नियम भी कुछ मान्यताओं एवं दशाओं पर आधारित ... आर्थिक नियमों को वैज्ञानिक नियमों की श्रेणी में क्यों नहीं रखा जा सकता। रॉबिन्स का विचार था कि ... मान्यताएँ सुनिश्चित कर ली जायें तो नियम चाहे भौतिक विज्ञान का हो अथवा अर्थशास्त्र का निश्चित रूप से ... निष्कर्ष देगा।

रॉबिन्स के मतों को ध्यान में रखकर मार्शल के विचार की पूर्ण उपेक्षा नहीं की जा सकती। ... निर्विवाद सत्य है कि आर्थिक नियम उतने निश्चित नहीं होते जितने कि वैज्ञानिक नियम निश्चित होते हैं। ... आर्थिक नियम वैज्ञानिक नियमों की तुलना में अधिक मान्यताओं पर आधारित हैं।

क्या अर्थशास्त्र को विज्ञान कहना उपयुक्त है?

(IS IT JUSTIFIED TO CALL ECONOMICS A SCIENCE ?)

आर्थिक नियमों की प्रकृति का अध्ययन कर लेने के बाद निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर अर्थशास्त्र ... विज्ञान कहा जा सकता है–

1. **सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का तर्क** (Logic of Law of Diminishing Marginal Utility)–कुछ आर्थिक नियमों की प्रकृति पर व्यक्ति की स्वतन्त्र इच्छा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उदाहरण के लिए, सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम (law of Diminishing Marginal Utility) इस सार्वभौमिक तथ्य को स्पष्ट करता है कि यदि उपभोक्ता वस्तु की एकसमान इकाइयों का उपभोग निर्बाध रूप से करता ... प्रत्येक अतिरिक्त इकाई से उसे क्रमश: घटती सीमान्त उपयोगिता प्राप्त होगी।

2. **उत्पत्ति ह्रास नियम का तर्क** (Logic of Law of Diminishing Returns)–कुछ आर्थिक नियमों की क्रियाशीलता पर कुछ बाहरी तत्वों का प्रभाव पड़ता है तथा जो व्यक्ति की स्वतन्त्र इच्छा के प्रभाव ... परिधि में नहीं आते हैं। उदाहरण के लिए, क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम (law of diminishing returns) यह बताता है कि जैसे-जैसे हम उत्पादन करते जाते हैं, वैसे-वैसे प्रकृति की कृपणता के कारण किसी एक ... की उत्पादकता कम होती जाती है।

3. **सामूहिक व्यवहार का तर्क** (Logic of Collective Behaviour)–व्यक्तिगत व्यवहार ... अपेक्षा सामूहिक व्यवहार की विवेचना आर्थिक नियमों द्वारा सही की जा सकती है। एक व्यक्ति का व्यवहार परिवर्तनशील हो सकता है लेकिन सामूहिक व्यवहार अधिक निश्चित तथा सही पाया जाता है। ... अर्थशास्त्र (Macro Economics) के अधिकांश आर्थिक नियमों का सम्बन्ध व्यक्तियों के सामूहिक व्यवहार (Collective behaviour) से पाया जाता है।

4. **मुद्रा रूपी मापदण्ड का तर्क** (Logic of Measuring Rod of Money)–मुद्रा रूपी मापदण्ड होने के कारण आर्थिक नियम अन्य सामाजिक विज्ञानों के नियमों से अधिक निश्चित एवं विश्वसनीय पाये जाते हैं।

Scanned with CamScanner

5. **मौसम विज्ञान का तर्क** (Logic of Weather Forecast)—यह भी एक निर्विवाद सत्य है कि अधिकांश परिस्थितियों में जीव तथा मौसम विज्ञानों के नियम भी निश्चित एवं स्थायी नहीं पाये जाते तथा इनके सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणियाँ असत्य सिद्ध हो जाती हैं, किन्तु केवल इस कारण से ही जीव तथा मौसम विज्ञानों को विज्ञान की श्रेणी से वंचित नहीं कर दिया जाता। इसी प्रकार आर्थिक नियम भी भविष्य की आर्थिक गतियों तथा धारणाओं के बारे में पूर्वानुमान लगाने का कार्य करते हैं। जीव तथा मौसम विज्ञान की भविष्यवाणियों की तरह यह भी सम्भव है कि ये आर्थिक अनुमान कम निश्चित पाये जायें। इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्री भी वैज्ञानिकों की भाँति अपने नियमों में वैज्ञानिक रीति निहित करने का प्रयास करता है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर आर्थिक नियमों को वैज्ञानिक नियमों की संज्ञा दी जा सकती है तथा अर्थशास्त्र को विज्ञान कहना अधिक उपयुक्त होगा।

Scanned with CamScanner